सितम्बर – अक्टूबर 2023

सम्पादन : प्रभात
डिज़ाइन : खुशी
आवरण पर माँडना मदन मीणा के सौजन्य से
वितरण : लोकेश राठौर
वर्ष 14 अंक 159–160
' मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

yatra foundation

प्रबंधन
विष्णु गोपाल,
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
H-1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर,
मानटाउन, सवाईमाधोपुर
राजस्थान
322001

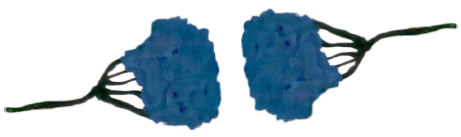

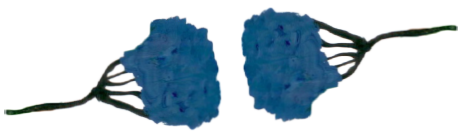

इस बार

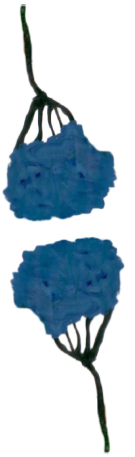

खिड़की
सरकण्डा और जैतून का पेड़
मालिक और नौकर

गीत-कविताएं
घण्टी बण्टी
कार
तितली
एक थी लड़की

कहानियाँ
धारिया बटेर और सफेद गिद्ध
रामपुर की रामलीला

याद की धूप-छाँव में
कुत्ते भी समझदार हो गए – रामभजन

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर
टापरी वाला स्कूल
बातचीत – जाबिद और प्रभात
देवा बावरिया

बात लै चीत लै
नेकी क ऊपर बद्दी हो जात है का?

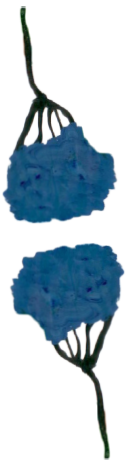

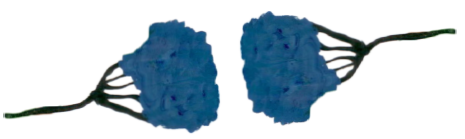

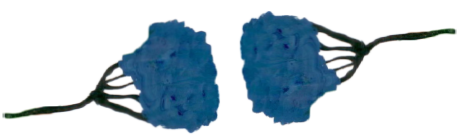

खि ड़ की

सरकण्डा और जैतून का पेड़

मनीषा गुर्जर, पीपल समूह

सरकण्डे और जैतून के पेड़ में यह बहस हो गयी कि उन दोनों में से कौन ज्यादा मजबूत और ताकतवर है। जैतून के पेड़ ने सरकण्डे का मजाक उड़ाते हुए कहा कि वह तो हवा का हर झौंका आने पर झुक जाता है।

सरकण्डा खामोश रहा।

जोर की आँधी आयी– सरकण्डा खूब हिलता–डुलता, दायें–बायें होता और जमीन तक झुकता रहा, इस तरह वह बच गया।

जैतून के पेड़ ने अपनी ाखाओं को आँधी के खिलाफ अकड़ा लिया और इस तरह वह टूट गया।

लियो टॉल्सटॉय

मालिक और नौकर

आरती मीना, सागर समूह

किसी घर में बहुत–से लोग शादी के मौके पर जमा हुए। पड़ौसी ने अपने नौकर को बुलाकर कहाः ''जाकर वह देखो कि शादी में कितने लोग आये हैं।''

नौकर गया, उसने रास्ते में एक लठ्ठा रख दिया और पुश्ते पर बैठकर यह इन्तजार करने लगा कि कब लोग घर से बाहर निकलते हैं।

लोग बाहर आने लगे। जो भी बाहर आता, लट्ठे से ठोकर खाता, बुरा–भला कहता और आगे चल देता। सिर्फ एक बुढ़िया ही ऐसी बाहर आयी जो लट्ठे से ठोकर खाकर वापस लौटी और उसने उसे उठाकर एक तरफ कर दिया।

नौकर अपने मालिक के पास लौटा। मालिक ने पूछाः

''बहुत लोग आये थे क्या वहाँ?'' नौकर ने जवाब दियाः

''सिर्फ एक ही, और वह भी बुढ़िया।''

''भला यह कैसे हो सकता है?''

''इसलिए कि मैंने रास्ते में लकड़ी का एक लट्ठा फेंक दिया था, सभी उससे ठोकर खाकर गिरते रहे, मगर किसी ने भी उसे उठाकर एक तरफ नहीं किया। भेड़ें भी ऐसा ही करती हैं। केवल एक बुढ़िया ने उसे उठाकर एक तरफ को कर दिया, ताकि दूसरे लोग न गिरें। ऐसा असली इंसान करते हैं। सिर्फ वही इंसान है।''

लियो टॉल्सटॉय

खिड़की

गीत कविताएँ

सुमन, खुशबू समूह

घण्टी बण्टी

धूल भरी थी गैल
जिसमें चल रहा था बैल
बैल के गर्दन में घण्टी
घण्टी से लिपट गया बण्टी

पिंकेश गुर्जर, कक्षा–7, समूह –लोटस।

कार

काले रंग की मेरी कार
दो सीटें हैं पहिए चार
बैठे उसमें चार सवार
गए देखने कुतुबमीनार।

शान्तिदेवी गुर्जर, शिक्षिका, फरिया।

नीतू शर्मा, फूल समूह

तितली

फर फर उड़ जाती है
फूलों पर मंडराती है
पीने में रस पीती है
खाने में क्या खाती है

मनीषा बैरवा, कटार

एक थी लड़की

एक थी लड़की
बातों की खिड़की
खड़ी थी मैदान में
हाथ में फुटबॉल और
चुन्नी गिरेबान में
बाहें चढ़ाकर
कदम बढ़ाकर
बोली मैदान में
खेलूँगी फुटबॉल मैं
इस सुंदर जहान में।

रामभजन, शिक्षक,
उदय सामुदायिक
पाठशाला, गिरजिपुरा।

कहानियाँ

धारिया बटेर और सफेद गिद्ध

एक बहुत पुराना जंगल था। उसमें बहुत सालों से कई तरह के पक्षी रहा करते थे। उनमें एक पक्षी था, उसका नाम था धारिया बटेर। वह खेजड़ी के वृक्ष के नीचे झाड़ियों में रहता था। झाड़ियों में ही जमीन पर उसके अण्डे थे। बहुत दिन बीत गए अण्डों से बच्चे निकल आए थे। गर्मियों का मौसम भी आता जा रहा था। भोजन की कमी आ गई। बटेर इधर उधर से भोजन इकट्ठा करने लगा। भोजन की तलाश में सभी पक्षी इधर उधर भटकने लगे। कुछ दिनों बाद वहाँ एक विचित्र पक्षी आया। उसे देखकर जंगल के सभी पक्षी डरे हुए थे। उसका नाम सफेद गिद्ध था। यह घास के मैदान में रहने वाला पक्षी था। उसे भूख लगी तो वह धारिया बटेर के पास गया। धारिया बटेर सुंदर स्वभाव वाला पक्षी था। वह सफेद गिद्ध को देखकर डर गया। डरते हुए उसने सफेद गिद्ध को थोड़ा सा भोजन दे दिया।

सफेद गिद्ध ने कहा–'तुम बटेर हो तुम थोड़ा खाते हो। मैं सफेद गिद्ध हूँ मैं ज्यादा खाता हूँ। तुमने अपने बराबर ही मुझे दिया। इससे होगा क्या? और लाओ।''

'और तो नहीं है।'' बटेर ने कहा।

'नहीं है तो मैं कुछ छोटे जीवों को खा लेता हूँ।' सफेद गिद्ध ने कहा।

'नहीं नहीं उन्हें मत खाओ।' बटेर ने कहा।

'तो चलो मैं पक्षियों के घोंसलों में रखे अण्डे खा लेता हूँ। अण्डों को कंकड़ से तोड़ना मुझे आता है।' सफेद गिद्ध ने कहा।

'नहीं नहीं उन्हें मत खाओ।' बटेर ने कहा।

मीनाक्षी मीना, जमूलखेड़ा

'ये मत खाओ वो मत खाओ। तब मैं क्या खाकर जिन्दा रहूँ।' सफेद गिद्ध ने कहा।
'पहले जहाँ तुम रहते थे, वहाँ क्या खाते थे?' धारिया बटेर ने साहस बटोर कर कहा।
'लाशें। जानवरों की लाशें।' सफेद गिद्ध ने बताया।
धारिया बटेर ने राहत की साँस ली। उसने कहा–'मैं तुम्हें वो जगह बताता हूँ जहाँ लोग मरे जानवरों को डालकर जाते हैं। पर वह जंगल से थोड़ा बाहर की तरफ है।'
'तो मुझे उस तरफ ले चलो धारिया बटेर।' सफेद गिद्ध ने उत्सुकता से कहा।
धारिया बटेर सफेद गिद्ध को जानवरों की लाशों वाली जगह पर ले गया। सफेद गिद्ध अब उधर ही रहने लगा। धारिया बटेर अपने जंगल में वापस लौट आया। छोटे जीवों, पक्षियों और डबरे के कीड़े मकोड़ों के बीच।

फतेह सिंह गुर्जर, उम्र 12 वर्ष, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

रामपुर की रामलीला

नील

चित्रः शिवम चौधरी

दूर-दूर से लोग रामपुर में रामलीला देखने आते। रामपुर की रामलीला में कुछ न कुछ मज़ेदार होता रहता था। जैसे, रामलीला के किरदार युद्ध के समय असल में लड़ने लग जाते थे। एक-दूसरे के कपड़े फाड़ देते। बाल नोंच लेते थे।

अब हुआ यूँ कि एक दिन पंचायत में बात हुई कि दशहरा नज़दीक आ रहा है तो रामलीला रखी जाए।

गाँववाले बोले, "हाँ, हाँ, ज़रूर।"

तो तय हुआ कि गाँव के चौराहे पे जो नीम का पेड़ है, वहाँ रामलीला होगी। सब बड़े खुश हुए। आसपास के गाँवों में भी पता चल गया कि रामलीला होने वाली है।

ऐन वक्त पर हुआ यह कि रावण बीमार पड़ गया। भीड़ में एक आदमी बैठा हुआ था। मोटा-ताज़ा, हट्टा-कट्टा। सरपंच ने उसे बुलाया, "हमारा रावण बीमार पड़ गया है। क्या तू रावण का किरदार कर सकता है?"

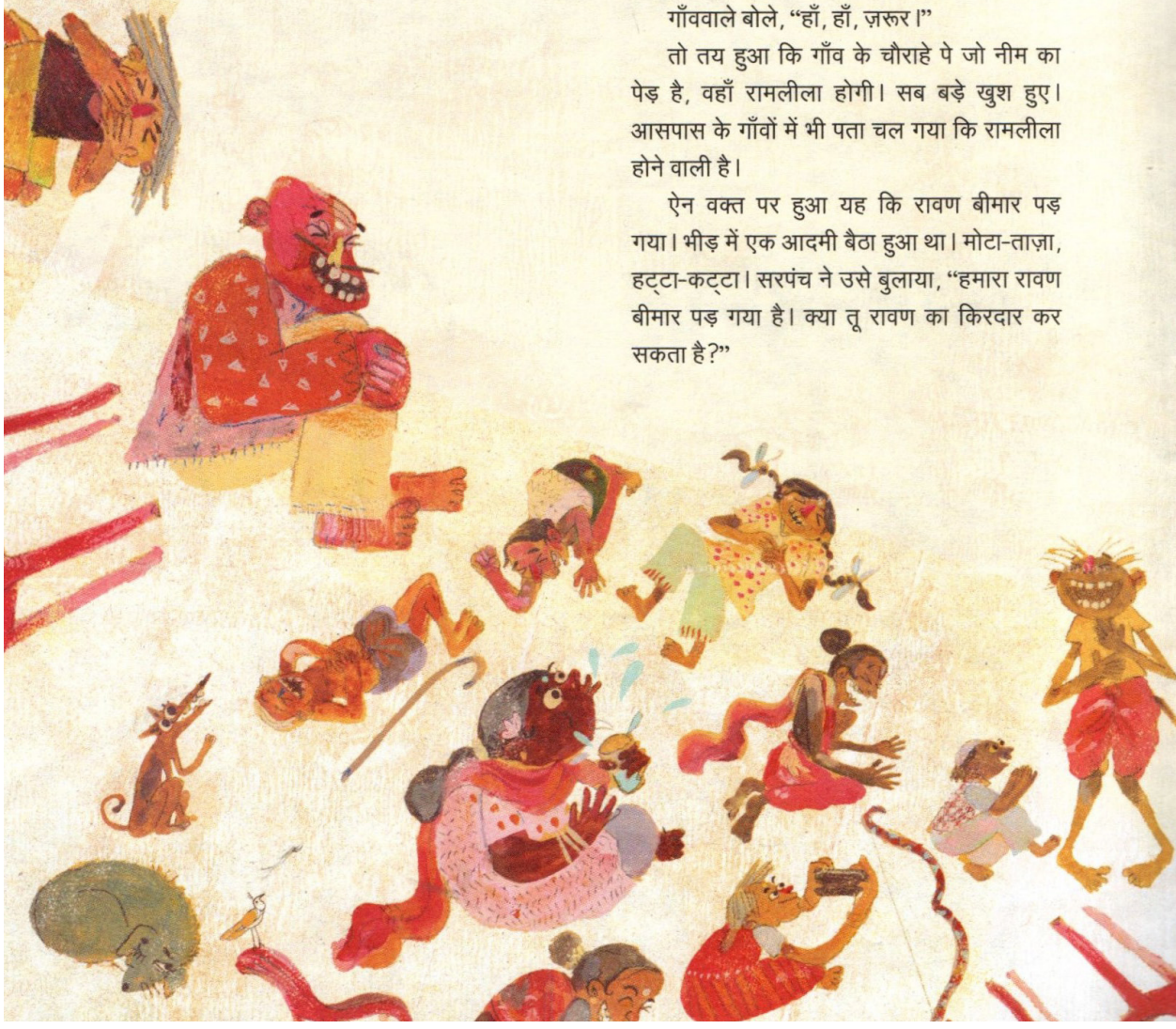

नील, उदय सामुदायिक पाठशाला (शहरी), हाउसिंग बोर्ड के पूर्व छात्र हैं।

आदमी ने सोचा, पहली बार किसी रामलीला में काम का मौका मिला है। तो ना करने का तो सवाल ही नहीं बनता। उसने 'हाँ' कर दी।

उसे अन्दर ले जाया गया। उसे बताया कि राम तेरे से पूछेंगे कि पापी कौन है तू? तो तू बोलना कि रावण हूँ। बस इतना ही बोलना। आदमी बोला, "ठीक है।"

रामलीला शुरू हुई। थोड़ी देर बाद रावण की एन्ट्री हुई। लोग हूटिंग करने लगे। तब राम रावण के पास आए। उसकी तरफ बाण दिखाकर बोले, "पापी, कौन है तू?"

रावण ने सोचा, "मर गए। यह तो बाण चलाएगा।"

राम दोबारा बोले, "अरे पापी, बता कौन है तू?"

वह बोला, "साहब, हाबू हलवाई।"

लोग बुरी तरह हँसने लगे। बूढ़े लोग हँसते-हँसते चबूतरे पर से गिर गए। जवान लोग हँसते-हँसते पीछे की तरफ गुलाटी खाने लगे। बच्चे ज़मीन पर लोटपोट होने लगे। सरपंच साहब कुर्सी पर से गिर पड़े। ज़मीन पर लेट गए और बुरी तरह हँसने लगे। उधर राम लक्ष्मण भी हँसते-हँसते स्टेज से नीचे गिर पड़े।

हाबू हलवाई भी हँसते-हँसते सोचने लगा, "पता नहीं, ये लोग इतना क्यों हँस रहे हैं?"

(नील नवीं में पढ़ते हैं। क्रिकेट सीख रहे हैं।)

यह कहानी और चित्र साइकिल से साभार।

याद की धूप छाँव में

कुत्ते भी समझदार हो गए

रामसिंह मीना, पूर्व शिक्षक, जगनपुरा

मार्च के महीने की बात है। विद्यार्थी और अध्यापक सभी विद्यालय में आने वाले जानवरों से परेशान थे। क्योंकि बार बार उन्हें भगाने के लिए जाना पड़ता था। जिससे समय व पढ़ाई बर्बाद होती थी। एक दिन की बात है। कुछ बच्चे दो पिल्ले पकड़कर ले आए। और कहने लगे कि, 'ये जानवरों को भगाएंगे।'

सबने कहा–'ये तो अच्छी बात है।'

बच्चे उनसे खेला करते, उनके लिए कोई रोटी तो कोई बिस्किट लेकर आते । बच्चों के साथ वे कई तरह की अठखेलियाँ करतें थे। छोटे बच्चे तो उन्हें पकडकर समूह में ही ले जातें थे। बच्चे भी बहुत खुश थे। इस तरह दिन गुजरते गए। अब धीरे धीरे वे बड़े होने लगे। जैसा कि एक कहावत है कि "स्वभाव कभी नहीं बदलता है।" उनके साथ भी ऐसा ही हुआ। जैसे ही वे किसी कुत्ते को देखते तो जोर जोर से भौंकना शुरू कर देते। वे इतने जोर जोर से भौंकते थे कि बच्चों की पढ़ाई बाधित होने लगी। वे भौंकते थे यहाँ तक तो ठीक था। पर वे कुत्तों को देखकर बाहर जाने की बजाय, कमरों में घुसकर भौंकते थे। उनकी इस हरकत से बच्चे और अध्यापक सब परेशान हो गए। उनको लाए थे परेशानी दूर करने के लिए, अब वे खुद ही परेशानी बन गए। जब वे छोटे थे तो बड़े प्यारे थे। बच्चे उनको गोद में लेकर घूमते थे। पर अब सभी को बुरे लगने लगे। अगर कोई कुत्ता सड़क पर भी दिख जाए तो भौंकना शुरू । बच्चे उनको विद्यालय से बाहर भगाने पर उतारू हो गए। पर अब वे जाने वाले नही थे। जब भी उनको बाहर भगाया जाता, थोड़ी ही देर में वापस आ जाते। अब करें तो क्या करें। जानवरों को भगाएँ या इनको। बच्चों ने समूह में डण्डा रखना शुरू कर दिया। शायद यही एक विकल्प बचा था। इससे वे समूह के अंदर नहीं आते थे। ऐसे कुछ दिन निकल गए।

अब एक बात जरूर देखने को मिली। जब कोई बच्चा या अध्यापक जानवरों को भगाने के लिए भागता था, तो ये कुत्ते भी उसके साथ भागते थे। वे जानवरों की तरफ भौंकने लगते थे। अब सारे दिन उनका यही काम था। धीरे धीरे उनकी ऐसी आदत हो गई कि जब भी उन्हें कोई गाय,भैंस, बकरी दिखाई देती, वे तुरंत उठकर दौड़ पड़ते और उनकी तरफ भौंकने लगते। जब तक वह बाहर नहीं निकल जाता तब तक उसके पीछे पड़े रहते और उनको बाहर निकाल देते। उनका ये काम देखकर सभी दंग थे। जिस काम के लिए इनको लाए थे। अब वही काम वे कर रहे थे। सभी बहुत खुश थे। शायद कुत्ते भी समझ गए थे कि अगर हमें यहाँ रहना हैं तो ये काम तो करना ही पड़ेगा। जो कुत्ते सबको बुरे लगते थे अब सबको अच्छे लगने लगे थे। अब वे कभी कभी ही तंग करते है, जब वे बिना बात जोर–जोर से भौंकने लगते है।

रामभजन योगी, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर

1.
रेडियो मेरा गूगल

अब बिजली बड़े गाँवों में पहुँचने लगी थी। पर आती इतनी कम थी कि उसके जाने से ज्यादा शोर उसके आने पर मचता था। दूर–दराज के पहाड़ी या जंगल से सटे छोटे गाँव और ढ़ाणी अभी भी इससे दूर थे। 2004 तक लोगों के हाथ में किसान टॉर्च आ गई थी। जिसे चार्ज करने के लिए किसान कई–कई किलोमीटर दूर जाते थे। कुछ लोगों के लिए तो यह रोजगार भी था, जो चार्ज करने के पाँच रूपैये लेते थे। आगे चलकर यही दाम मोबाइल चार्ज करने के लिए लिया जाने लगा था। मैंने इन्हीं गाँव ढ़ाणियों में ही शिक्षा के क्षेत्र में काम करने का सपना देखा था। अपने कार्य के आरंभिक दिनों में ही मुझे ये बात समझ आ गई थी कि देश दुनिया से जुड़ने का एक मात्र साधन रेडियो ही है। घर में लगभग अनुपयोगी हो चुके फिलिप्स के तीन सेल वाले रेडियो ने मेरा खूब साथ निभाया। आकाशवाणी, विविध भारती और बी.बी.सी. के माध्यम से हर खबर से परिचित करवाता साथ ही खेल, गीत, कविता, नाटक, वार्ताओं की श्रृंखला आदि रुचिपूर्ण कार्यक्रमों से।

मेरा यही रेडियो एक जिगरी दोस्त की तरह रूँधबीणक से अब मेरे साथ सवाईमधोपुर आ चुका था। मेरा यह रेडियो उन खास पलों और घटनाओं का एक मात्र साक्षी रहा जो मेरे काम के पहले दस वर्षों में घटी।

2.
सपनों का स्कूल

जगनपुरा स्कूल को अभी खयालों की दुनिया से बाहर आना बाकी था। मैने आरंभ के कुछ दिनों में देवताओं के चबूतरे और बबूल के पेड़ के नीचे बच्चों को खेल, कहानी, गीत करवाकर शिक्षण की शुरूआत की। इनमें अधिकांश बच्चे स्कूल जाने वाले थे जो छुट्टियों के चलते आ रहे थे। मेरे साथी मनीष के मुफ्त शिक्षा के वादे के बावजूद मैं बच्चों का
शैक्षणिक स्तर जाँचने के लिए उन्हीं की कॉपी और पेन का स्तेमाल कर रहा था।
अब मुझे खेल, कहानी, गीत–कविता से आगे शिक्षण के समय को धीरे–धीरे बढ़ाते हुए कुछ ठोस कार्य भी करवाने थे। इसके लिए कुछ और सामग्री की आवश्यकता थी। जो बच्चों के पास तो हो ही नहीं सकती थी। इसलिए हम अपनी पहली खरीद के लिए निकले।
सवाईमाधोपुर के सबसे बड़े पुस्तक विक्रेता गोयल पुस्तक भण्डार पर पहुँचे जहाँ सीजन के चलते ग्राहकों की भीड़ लगी हुई थी। मेरे साथी ने उनसे बातचीत के लिए थोड़ा समय माँगा। कुछ ही समय में हम उसे यह समझाने में कामयाब हो गये कि जल्द ही हम सवाई माधोपुर में उनके सबसे बड़े खरीददार होने वाले हैं। बात समझ आने पर उसने अंदर
बिठाया, चाय–पानी पिलाया और पूछा बताओं क्या सामान दूँ। हमने दो पेपर रिम, दो रजिस्टर, दो कॉपी, दो उपस्थिति रजिटर, दो स्केल, दो स्टॉक रजिस्टर, दो रिंग बॉल, दो डायरी, कार्बन पेपर, पेन, कलर, पेन्सिल, कटर, इरेजर, रबर बॉल खरीदी। जिसकी कुल कीमत पन्द्रह सौ रुपैये थी। दुकानदार भी देखकर सोचने लगा इतने से सामान से कोई कैसे स्कूल चला सकता है? और उस पर फीस के साथ शिक्षण सामग्री भी मुफ्त देने की बात तो उसके गले ही नहीं उतर रही थी।
सारा सामान एक कपडे के थैले में डालकर हम वापस लौट आए। यही थैला अगले कुछ दिनों तक हमारा चलता फिरता स्टोर था और मैं था उस स्टोर का स्टोरकीपर।
स्टोरकीपर ही क्यूँ मुझे चौकीदार, सफाईकर्मी, टीचर, ट्रेनर, कोर्डिनेटर, प्रधानाचार्य, कम्युनिटी मोबलाईजर भी कहा जा सकता था। किसी भी नये काम की शुरूआत ऐसे ही होती है। मैंने सारे सामान को स्टॉक रजिस्टर में दर्ज कर उपयोग हेतु जारी कर दिया। और इस तरह अपने सपनों के स्कूल की बुनियाद रखते हुए व्यवस्थित और योजनाबद्व शिक्षण की शुरूआत की।

3.
टापरी वाला स्कूल

बच्चों की शिक्षा के लिए स्कूल और स्कूल के लिए जमीन की आवश्यकता होती थी। जहाँ लोग एक कूड जमीन के लिए जान देने को तैयार रहते हैं, वहाँ पाँच बीघा जमीन मिलना आसान नहीं था। समुदाय के तमाम मतभेद, वाद–विवाद और कई स्थानों पर विचार करते हुए अन्त में जिस स्थान को लेकर सहमति बनी, उसे उस समय छापर कहते थे। आज के जगनपुरा को उस समय छापर या जगना का टापरा कहते थे। मुख्य गाँव यहाँ से दो किलोमीटर दूर था। समुदाय में कुछ लोग ऐसे थे जिन्हें हम पर विश्वास नहीं था और वे इसे जमीन पर कब्जा कर होटल बनाने की साजिश बताते थे। लोगों में सन्देह उत्पन्न करना इनका मुख्य काम था। आगे भी जब–जब लोगों के व्यक्तिगत स्वार्थ या हितों को स्कूल के लिए दरकिनार करने की बात आती तो वे जमीन पर कब्जा कर होटल बनाने को हवा देने लगते। आज बीस साल की उपलब्धियों के बाद भी यह समुदाय के कुछ लोगों का यह संदेह बरकरार है।

खैर जिस जमीन पर गाँव के गाय भैंस चरते थे अब वहाँ बच्चों की उछल–कूद होने लगी। जून–जुलाई का महीना और आस–पास एक भी पेड़ नहीं होने के कारण छाया का प्रबंध करना जरूरी था। ताकि पाँच घण्टे शिक्षण किया जा सके। दोपहर में अचानक से घिर आने वाले बादल भी मानो कह रहे हों कि अपना स्कूल जल्दी बना लो हम बारिश को अब और नहीं रोक सकते। पन्द्रह सौ रुपयों की शिक्षण सामग्री खरीदने वालों के लिए पक्के भवन की बात उस समय दूर की कौड़ी थी। जिस तरह समुदाय ने विश्वास करके जमीन दी उसी तरह पहले अस्थाई ढाँचे के लिए थूण, बल्ली, रस्सी, बाजरे की कड़प, छान बनाने वाले कारीगर और अन्य आवश्यक चीजों की व्यवस्था समुदाय की तरफ से हो रही थी।

शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी के नित नये प्रयोग देखने को मिल रहे थे। युवा जहाँ श्रमदान कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहे थे, वहीं महिलाएं कार्यकताओं के लिए रोटियाँ बनाकर भेज रही थी। बच्चे पानी लाने और पिलाने का फर्ज निभा रहे थे।

कौन छोटा कौन बड़ा यहाँ सभी तरह के भेद मिटते नजर आ रहे थे। सवाईमाधोपुर जिले के जिला प्रमुख की लाल बत्ती की गाड़ी दिन–दिन भर स्कूल पर खड़ी रहती। और जिला प्रमुख जी बाँस–बल्ली ढोते नजर आते। उनकी गाड़ी में अक्सर काम पर जाते आम जन और स्कूली बच्चे बैठे दिखाई देते।

एक दिन तो गजब हो गया, जब दिन भर की थकान से चूर सब दोपहर के भोजन के लिए आकर बैठे तो पता चला कुत्ते सारी रोटियाँ ले गये। पर मजाल किसी ने एक दूसरे को दोष दिया हो। यह बात गाँव तक भी पहुँच गई और एक घण्टे बाद घरों से गरम–गरम रोटियाँ आ गई। इन रोटियों में जो स्वाद आया वह आज भी स्मृतियों में जिन्दा है।

लगभग सात दिनों के अन्दर, साठ गुणा पन्द्रह फुट की घास–फूस की टापरी वाली 'उदय सामुदायिक पाठशाला' बनकर तैयार हो गई। इसमें दो कक्षा कक्ष और एक ऑफिस बनाया गया। ऑफिस जिसमें मैं रहता भी था। रहना इसलिए जरूरी नहीं था कि खुले में रखी शिक्षण सामग्री की सुरक्षा करनी है बल्कि इसलिए कि छुट्टा पशुओं से पाठशाला को ज्यादा खतरा था। घास–फूस की झोंपड़ी से बना स्कूल इन्सानों के साथ–साथ जानवरों को भी आकर्षित करती था। आगे चलकर यह टापरी वाले स्कूल के नाम से जाना गया और मैं टापरी वाला शिक्षक।

विष्णु गोपाल

बावरिया बस्ती

सवाईमाधोपुर में जंक्शन के पास जो पुलिया है, उसे यहाँ के लोग झूला कहते हैं। उस झूले के नीचे पटरियों के पास मुहल्ले भर के दायरे में एक झोंपड़पट्टी दिखाई देती है। शहरी मुहाव. रे में कहें तो 'इस मैली कुचैली बस्ती में मैले कुचैले लोग रहते हैं, जिन्हें सरकार जिस दिन चाहेगी उस दिन खदेड़ देगी क्योंकि यह अनाम बस्ती सरकारी जमीन पर बसी हुई है।' लेकिन कुछ लोगों के लिए इस बस्ती का नाम भी है और वे इसे बावरी बस्ती या बावरिया बस्ती कहते हैं। इस बस्ती में जो लोग रहते हैं बावरिया समुदाय के लोग हैं। बावरिया एक घुमन्तू समुदाय है। तमाम घुमन्तू समुदायों की तरह इस धरती पर इनकी अपनी कोई धरती नहीं है। इस बस्ती के जीवन की एक झलक इस बातचीत से मिलती है। इस समुदाय में काम कर रहे ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के साथी जाबिद के अनुभवों ने इस बातचीत को समृद्ध बनाया है। वे बातें बतायी हैं जो इधर से गुजरते हुए कभी सोची न जानी।

प्रभात : बावरी बस्ती में लोग कब से रह रहे हैं?

जाबिद : ये लोग बताते हैं कि हम पचास साल पूर्व से यहाँ पर रह रहे हैं। ये लोग गुजरात से आए थे और शुंरूआत में ये पाँच परिवार आए थे।

प्रभात : गुजरात से क्यों आए थे?

जाबिद : गुजरात से यूँ आए थे कि वहाँ पर इनका नमक का काम था, वो काम बंद हो गया था इनका।

प्रभात : नमक का क्या काम था?

जाबिद : समुद्र से नमक निकालते थे ये। उस काम में इनका शरीर गलने लग जाता था। हाथ पैर गल जाते थे तो बीमारियाँ फैलने लगती थी। तो ये पाँच परिवार वहाँ से निकलकर इधर आ गए। इनका मुखिया था गिरधारी। इन्होंने यहाँ आकर अलग–अलग रोजगार शुरू किए। फिर इन्होंने यहाँ सवाईमाधोपुर आकर गुलदस्ते का काम भी सीख लिया। गुलदस्ते के बाद कुछ लोग पिंजरा बनाने लगे। वैसे पिंजरे जिनमें लहसुन वगैरा रखकर टाँगते हैं घरों में वो बनाया। इसके अलावा काच का महल भी बनाते हैं ये लोग। लेकिन मैंने जितना देखा इनको, अभी तक कुछ विकास नहीं हुआ था इनका। अब ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनसे काफी समय से जुड़ा हुआ है।

प्रभात : इनके घरों के हालात किस तरह के हैं आपने तो अंदर जाकर भी देखे होंगे। ये लोग झुग्गियों में पन्नियों में रहते हैं।

जाबिद: हाँ, इनके घर झुग्गियाँ पन्नियाँ ये ही हैं। जहाँ पर इन्हें जगह मिलती है, वहाँ टापरी बना लेते हैं ये और वहाँ रहते हैं, चाहे बरसात हो चाहे गर्मी हो चाहे सर्दी हो। खराब मौसम में कभी कभी तो झोंपड़ी उड़ भी जाती है इनकी। ये भी हालात हैं कि झोंपड़ियाँ भी उड़ जाती हैं।

प्रभात: इनमें नशेबाजी भी है?
जाबिद : हाँ इनमें थोड़ा शराब का ज्यादा है। गाँजा भी पीते हैं, नसवार वगैरा भी करते हैं।
प्रभात : मैं कई बार देखता हूँ, लड़ते–झगड़ते भी बहुत रहते हैं।
जाबिद : लड़ाई बहुत होती है इनके अंदर। मान लो किसी की कोई चीज चोरी कर ले गया। या थोड़ी बहुत चुगली भी कर दी किसी ने और एक दूसरे को पता चल गया तो लड़ाई हो जाती है। लेकिन इनकी पुरूषों की लड़ाई है वो तो लाठी डण्डे से होती है। महिलाओं की लड़ाई है वो ताली पीटने और डण्डा पीटने से होती है। जमीन पर डण्डा पीटती रहती हैं वो।
प्रभात: मारती नहीं है एक दूसरे को?
जाबिद : मारती नहीं है किसी को ये मैंने देखा है।
प्रभात : जमीन पर डण्डा पीटती हैं तो उसका क्या मतलब होता है?
जाबिद : उसका मतलब लड़ना ही होता है। डण्डा पीटते हुए बोलती रहती हैं– 'तेरा दीकरा मरे। तेरे भाई का माथा खाऊँ।' मतलब गुस्सा निकाल लेती हैं वो। एक पुतला बना लेती है। उसके डण्डे मारती है। उसको लेकर घूमती हैं पूरी बस्ती में। जिसने इनके साथ बुरा किया है, इनका इकट्ठा किया कबाड़ा छीना है उसके खिलाफ बोलती रहती है गुस्से में।
प्रभात: कबाड़ी का काम भी करते हैं ये?
जाबिद: हां पन्नियाँ वगैरा बीनते हैं और उसको बेचते हैं। और भीख माँगने का काम भी ये करते हैं। और अभी हम जब से गए हैं इनके बीच हमने इन्हें बागवानी का काम दिलाया है।
प्रभात : इनके शादी–ब्याह कैसे होते हैं?
जाबिद: इनके लड़का और लड़की शादी–ब्याह बस्ती में भी कर लेते हैं और बाहर भी कर लेते हैं।
प्रभात : लेकिन आपने बताया कि ये पाँच ही परिवार आए थे तो ये तो एक ही परिवार हुए एक तरह से?
जाबिद : नहीं। धीरे–धीरे ये और लोगों को भी लाने लग गए। गुजरात में अहमदाबाद से भी लाए। अब लगभग ये एक सौ पिचहत्तर परिवार हैं। कुछ परिवार बम्बोरी में हैं। कुछ गुलाब बाग में हैं।
प्रभात : इनके शादी–ब्याह के बारे में बता रहे थे आप?
जाबिद : शादी में इनके दहेज का कोई चक्कर नहीं है। लड़की वाला पैसा लेता है। शादी में जो बारात जाती है उसको जिमाने का पैसा लेता है।
प्रभात : आपने देखी है कभी इनकी कोई शादी?
जाबिद : हाँ मैंने देखी है। बारात को ये खाना खिलाते हैं–पूड़ी सब्जी। अपनी तरह माँडा देना या गाँव को खिलाना ऐसे नहीं खिलाते ये। ये केवल पाँच पूड़ी, थोड़ी सी नुक्ती या एक जलेबी घरवाई देते हैं। उसे कहीं भी जाकर खाओ। खाने का ये पैसा भी, कोई बहुत गरीब होता है तो ही लेता है। कोई कोई लेता भी नहीं है।

प्रभात : शादी में क्या रस्में होती है?
जाबिद : तेल चढ़ता है, फेरे पड़ते हैं। देहज प्रथा नहीं है। लड़की जाएगी तब एक जोड़ी कपड़े जो पहन कर जाएगी, वही कपड़े हैं आगे वह ससुराल में जो मिलेगा वही पहनेगी।
प्रभात : यानी शादी के बाद वे उसी बस्ती में एक झोंपड़ी से दूसरी झोंपड़ी में चली जाएगी।
जाबिद : हाँ। एक झोंपड़ी से दूसरी झोंपड़ी में चली जाएगी।
प्रभात : कब कर देते हैं शादी ये लोग?
जाबिद : बारह से पन्द्रह वर्षों तक शादी कर देते हैं ये।
प्रभात: ये बच्चे तो बचपन से ही जानते हैं एक दूसरे को?
जाबिद : जानते हैं फिर उन्हीं के साथ शादी कर देते हैं। लड़का लड़की भी कई बार एक साथ घूमते रहते हैं। माँ–बाप देख लेते हैं ये साथ घूम रहे हैं ज्यादा। उन्हीं के साथ शादी कर देते हैं।

ये और भी जगह रहते हैं। जैसे लाखेरी है, भरतपुर है, वहाँ भी रहते हैं।

प्रभात : आपने इनकी भिक्षा वृत्ति के बारे में भी बताया था।

जाबिद : एक तो शनिवार के दिन शनि महाराज के नाम की भिक्षा माँगते हैं। इनके आदमी औरत कम कमाते हैं पैसा। कुछ परिवार बच्चों से भीख मँगवाते हैं। बच्चों से ही कबाड़ा बिनवाते हैं।

प्रभात : कहाँ माँगते हैं ये भीख?

जाबिद : यहीं बाजार में माँग लेते हैं। कई लोग गूँगे बहरे बनकर गाँवों में भी चले जाते हैं, कार्ड लेकर।

प्रभात : आप लोगों का ध्यान कैसे गया, इस समुदाय में काम करने को लेकर?

जाबिद : ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के राधेश्याम जी, (ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के बोर्ड मेम्बर) इनके मुखिया गिरधारी जी के समय से ही इनसे जुड़े हुए थे। अनौपचारिक रूप से जुड़े हुए थे इनके साथ। फिर सन् 2018 में तरुण जी (ग्रामीण शिक्षा के केन्द्र के शिक्षक) के द्वारा इनका सर्वे करवाया था। फिर तरुण जी ने दस बच्चों के साथ काम शुरू किया। फिर 2018 में ही मैं भी इस समुदाय में गया और इनकी मुखिया अनारो देवी से मिला।

प्रभात : इनमें मुखिया कैसे तय होता है?

जाबिद : इनमें मुखिया बस्ती निर्धारित करती है।

प्रभात : किस आधार पर निर्धारित करती है?

जाबिद : जो मदद करता है लोगों की। हर चीज में साथ निभाता है, चाहे हारी हो, बीमारी हो। हर चीज में जिम्मेदारी निभाता है। जिसकी लोग बात भी मानते हों। उसे ही लोग मुखिया चुन लेते है।

प्रभात : मुखिया बदलता कैसे है?

जाबिद: मान लीजिए किसी काम में कोई पैसा खा गया। या किसी की चुगली कर दी। तो उस मुखिया को बस्ती वाले मिलकर बदल देते हैं। जिसको बदलना है उस पर दण्ड रखते हैं। उसका काला मुँह करके उसको जूतों की माला भी पहनाते हैं।

प्रभात : ऐसी कोई घटना आपने देखी है?

जाबिद: हाँ मैंने देखी है। मुखिया तो नहीं था लेकिन एक लड़का था जिसने गलत काम किया था तो उसके बाल काट दिए थे।

प्रभात : क्या गलत काम किया उसने?

जाबिद : चोरी कर रहा था वो।

प्रभात : ये लोग चोरी नहीं करते?

जाबिद : इन लोगों का मानना है कि यहाँ नहीं करना है। अपने इलाके को बदनाम नहीं करना है, बाहर जाकर चाहे तुम कुछ भी करो। लेकिन यहाँ जो करता है उसके सिर के बाल काटकर पट्टा निकाल देते हैं और उसे जूतों की माला पहना देते हैं।

प्रभात : मुखिया बुढापे तक भी रह सकते हैं।
जाबिद : अगर बस्ती के हित में सोचने वाला मुखिया है तो मरने तक भी रह सकता है। गिरधारी जी के मरने के बाद ही अनारो देवी मुखिया बनी हैं।
प्रभात : फिर आगे इस समुदाय में क्या काम किया आपने?
जाबिद : फिर हमने पचास घरों का सर्वे किया। राधेश्याम जी ने, विष्णु जी ने एक शीट दी थी भरने के लिए कि इसे भर कर लाओ। इससे पता चलेगा कि इन लोगों की वास्तविक स्थिति क्या है। हम सर्वे करने गए। हमने सर्वे कर लिया। अब एक व्यक्ति हमारे पीछे पत्थर लेकर भागा। बोला–'यहाँ बहुत आ गए बहुत चले गए। किसी ने कुछ भी नहीं किया हमारे लिए, भाग जाओ यहाँ से।' फिर हम बचने के लिए मैं और पून्याराम जी एक घर में जाकर घुस गए। वो बोला–'मार देंगे तुमको।' सर्दी का मौसम था। फिर बाद में हम वहाँ से निकले। फिर हमने ऑफिस में आकर ये बात बतायी। अगली बार राधेश्याम जी हमारे साथ गए। उन्होंने बस्ती में सबको बिठाया और बताया कि हम आपके हित के लिए ही कुछ काम करने के लिए आए हैं। उसके बाद आगे जब हम गए तो हमको अच्छी तवज्जो दी। फिर हमने दस बच्चों की शिक्षा के साथ काम की शुरूआत की। शुरूआत हो गई तो हमने दो केन्द्र तो बावरी बस्ती में खोले और एक केन्द्र बम्बोरी बस्ती में खोला। तीन शिक्षक ग्रामीण शिक्षा केन्द्र ने लगाए और एक सामुदायिक कार्यकर्ता जो इनको स्वास्थ्य सुविधाएँ दिलाना, सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाना आदि कार्य करता था। जन साहस संस्था के द्वारा एक शिविर लगवाया, इससे इनको बहुत राहत मिली। फिर
इन्होंने कहा–हमको और भी राहत दिलवाओ। क्योंकि शिविर तो समाप्त हो चुका था, लेकिन समस्याएँ अभी बनी हुई थी। फिर मैं इन्हें सरकारी अस्पताल में दिखाने ले जाने लगा। पहले तो डॉक्टर भी भगा देते थे इन्हें। फिर मैंने डॉक्टर से बात की कि साहब ये भी इंसान ही हैं और ये हॉस्पिटल गरीबों के लिए ही तो बनाया गया है। अगर पैसे वाले होते तो ये क्यों आते आपके पास में। डॉक्टर ने कहा–'नम्बर दे जाओ आपके। अगर कोई चोरी चुकारी हुई तो आपकी जिम्मेदारी होगी।' ये जिन हालातों में रहते हैं जिस तरह से रहते हैं लोग ये समझते हैं कि ये चोर हैं। मैंने कहा–'मेरे नम्बर ले लो और कोई भी दिक्कत इनकी तरफ से आए तो मुझे फोन करना आप।''

एक को तो साँप ने काट लिया था। नारायण नाम था उसका। उसको ये देवता लेकर बैठे थे। मैं हॉस्पिटल लेकर आया उसे। एक बार एक कुँए में गिर गया था। वो भी ठीक हो गया। एक की कीचड़ में फिसलने से कूल्हे की हड्डी टूट गई थी। उसका भी ऑपरेशन सरकारी अस्पताल में करवाया। इसके बाद अब ये लोग सरकारी अस्पताल में इलाज करवाने लग गए। प्रसूति (डिलेवरी) पहले घर पर ही करवाते थे अब अस्पताल में आने लग गए। सरकारी योजना के अनुसार उसका पैसा भी मिलता है इन्हें।

प्रभात : झुग्गियों की एक बस्ती जिसे पुल से गुजरते हुए दूर से ही देखा करता था। उसके भीतरी संसार की वास्तविकताओं से आपने परिचित करवाया। उनके जीवन मूल्यों से, जीवन संघर्षों से और खाती पीती दुनिया उसे कैसे–कैसे अन्धविश्वासों से देखती है यह भी। शुक्रिया जाबिद भाई।

प्रस्तुति : प्रभात

देवा बावरिया

बावरिया एक घुमन्तू समुदाय है। इनकी कहीं कोई अपनी जमीन नहीं है। जहाँ रहने को खाली जमीन दिख जाती है, वहीं टाट और पन्नियों की झोंपड़ी डालकर रहने लगते हैं। ग्रामीण शिक्षा केंद्र ने बावरिया समुदाय के बच्चों की शिक्षा के लिए सवाईमाधोपुर के बाहरी इलाके बम्बोरी में एक केन्द्र चलाया। बावरिया समुदाय का ही एक युवक काला इन बच्चों को पढ़ाता है। देवा एक बावरिया बच्चा है। उसकी उम्र पाँच साल है। बम्बोरी बस्ती में अपने परिवार के साथ रहता है। काला के समूह में पढ़ता है।

एक दिन समुदाय के परिवारों में किसी बात को लेकर आपस में ही लड़ाई झगड़ा हो गया। वह झगड़ा बढ़ते–बढ़ते इतना बढ़ गया कि पुलिस केस भी हो गए। पुलिस धर–पकड़ के लिए बावरियों के घरों में आने लगी। बावरियाओं के परिवार बम्बोरी बस्ती से तितर–बितर हो गए। वे कहीं दूसरी खाली जगहों पर सामान डालकर रहने लगे। परिवारों के साथ बच्चे भी बिखर गए। काला का समूह बंद हो गया। देवा की पढ़ाई छूट गई।

बम्बोरी से बेघर हुआ देवा का परिवार सवाईमाधोपुर जंक्शन की पुलिया के नीचे बसी बावरिया बस्ती में ही कहीं रहने लगा। पुरानी जमी हुई जगह छूटने से काम धाम छूट गया। भीख माँगकर खाने की नौबत आ गई। इसी बीच देवा के आई और अब्बा के बीच भी किसी बात को लेकर झगड़ा गया।

देवा की आई को, देवा और उसकी दो बहनों के साथ बावरिया बस्ती से निकलना पड़ा। अब दो महीने से ये चारों रणथम्भौर सर्किल की बड़ी लाइट के नीचे रहते है। घर के नाम पर नीचे जमीन, ऊपर आसमान है। कुछ दिन पहले तक काला के समूह में पढ़ने वाला पाँच साल का देवा अब सुबह भीख माँगने जाता है और दिन में आई तथा बड़ी बहनों के साथ पन्नियाँ बीनने जाता है।

एक शाम मैं चारे वाली का इंतजार कर रहा था। अचानक देवा एक खिलौने की गाड़ी को सड़क के पानी में नहलाते हुए दिखा। वह मेरे पास से निकला। फिर अपने हाथ व गाड़ी को धोकर मेरी तरफ आया। मैं काला के समूह में मदद के लिए जाता था सो देवा मुझे अच्छी तरह जानता था और मैं देवा को। मैंने देखा है कि वह मुस्कराते रहने वाला, चचंल बच्चा है। उस शाम भी जैसे ही उसने मुझे देखा पास आकर बोला–'वह चारे वाली तो निकल गई गुरुजी।''

मैंने कहा–''अरे देवा! यह वह चारे वाली नहीं है। तुझे चारे वाली दादी अम्माँ कहना चाहिए उसे।''

फिर मैंने उससे कहा–''देवा तू अपने दाँतों को साफ नहीं करता है, ना ही अपने नाखून काटता है?'

देवा ने कहा, ''करता हूँ ना गुरुजी, नाखून से दाँत साफ करता हूँ।''

मैंने कहा–''कॉलगेट से साफ किया कर।''

''कॉलगेट तो नहीं है गुरूजी।''

मैंने कहा कि ''देवा, तू पढ़ने जाया कर यार, पढ़ने क्यों नहीं जाता है?''
उसने कहा–''तूने नाम तो काट दिया मेरा।''
मैंने कहा कि, ''मैंने तेरा नाम नहीं काटा है। सरकारी विद्यालय में पढ़ने के लिए कह रहा हूँ।''
तभी अचानक देवा कहता है कि ''गुरु जी मुझे भूख लगी है।''
मैंने कहा–''तो क्या मैं तुझे पैसा दूँ?''
वह बेझिझक बोला–''माँग कर खा लूँगा ना गुरुजी।''
थोड़ी देर में चारे वाली बुढ़िया वहाँ आ जाती है। देवा के पास ही चारे का गट्ठर पटकती है। उसमें से दिख रही कचरी को झट से तोड़कर देवा कहता है–''गुरुजी क्या मैं इसे खा लूँ?''
''खा ले देवा तुझे भूख भी लग रही है।'' मैंने उससे कहा। फिर वह कचरी को खाता खाता सड़क पर चलने वाले वाहनों और लोगों के बीच में खो गया। मैं चारा लेकर बुढ़िया की गाड़ी पर बैठ कर जैसे ही झूले पर चढ़ता हूँ तो क्या देखता हूँ कि देवा की आई और देवा का भाई एक थैली में खाने पीने का सामान लेकर जल्दी–जल्दी झूले पर से उतर कर आ रहे हैं।
फिर हुआ यह कि मैं लंबी छुट्टी पर बाहर चला गया। जब लौटा तो एक रोज मैं फिर उसी चौराहे पर खड़ा था। मैंने देखा देवा की बड़ी बहन गुब्बारे बेच रही थी। मेरे पास आकर बोली–''देखो मैंने भीख माँगना बंद कर दिया है गुरुजी, गुब्बारे बेचना चालू कर दिया है।''
इतने में ही देवा भी वहाँ आ गया और मुझे दूर से ही देखते हुए अपनी उँगली को मुँह में ब्रश की तरह फिराते हुए इशारा करके बता रहा था कि ''मेरा काँगलेट कहाँ है?''मैंने कहा, ''देवा बेटा! तू अब तक अपने दाँत नीम की दातून से साफ कर लेता।''
फिर मैं उसको एक ब्रश और पेस्ट के लिए रुपए दे ही रहा था कि उसकी बड़ी बहन ने चिल्लाते हुए मुझे रोका। बोली–''गुरुजी इसको मत देना यह खा जाएगा।''

उसने वे पैसे मुझसे लिए और बोली–''मैं लेकर आऊँगी इसके लिए कॉलगेट और ब्रश। इसको भी कराऊँगी और मैं खुद भी करूँगी?''

मुझे यह सुनकर काफी अच्छा लगा।

फिर वे दोनों भाई बहन वाहनों की भीड़ में कहीं गुम हो गए।

इसी बीच राजस्थान विधान सभा के चुनाव आ गए। सभी दलों के नेता चुनावी रैलियाँ कर रहे थे। एक रोज दशहरा मैदान में बड़ी रैली हुई। हजारों की भीड़ बसों में भर–भरकर लाई गई। उनके खाने पीने की व्यवस्था की गई। पानी पीकर फेंकी हुई बोतलों के ढेर लग गए। मैंने देखा देवा की नानी, आई, बहनें, भाई सब कट्टों में भर–भर बोतलें ले जा रहे हैं। बेच–बेच कर आ रहे हैं। देवा भी उनके साथ काम में जुटा हुआ था। मैंने उसे आवाज लगाई। उसने नहीं सुनी। फिर मैंने जोर से आवाज लगाई। इस बार उसने सुन ली। और सुनते ही भागकर मेरे पास आया। मैंने देखा उसके मुँह पर कचौरी–समोसे की झूठन के निशान छूटे हुए हैं। आते ही बोला–'आज खूब मजा आया गुरूजी। खूब खाया। आज जिन्दाबाद वाले आए थे।'

उसकी बहन भी आ गई। मैंने उससे कहा–''आज तो अच्छी कमाई हो गई काजल।'

''आज तो हजार की हो गई गुरूजी।''

दोनों बहन भाई को खुश देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। ऐसे दिन उनकी जिन्दगी में रोज आए। मैं सोच रहा था। पर यह सोचकर मुझे खुद ही अजीब लगा।

सुरेश चंद, शिक्षक, डीएनटी।

सम्पादन – प्रभात

बात लै चीत लै

नीति कै ऊपर बद्दी हो जात है का?

एक गैवारो रेय। वो गैवारो गाइ चरारौ जंगल मं। अब जंगल मं गाइ चरारौ तो दो–पांच कोस दूर पानी रेह। बे गाइ पानी पीबे आती जा जगह से। तो गैवारो ऐसे जारौ तो एक मंगर भी जंगल में जारौ। पानी पै जारौ मंगर भी। बानै कइ गैवारे से–'क यार मैं थक गा। तू ऐसौ कर मोय पानी पै ले चल।'
गैवारे ने की–'देख भइया तू मोय खा लेगौ, मैं तोय पानी पै ले चलैंगो तो। तू है मंगर, मैं हूं आदमी।'
'देख भइया गंगा–जमना बीच मअ् मैं तोय नीं खारौ।' मंगर ने की।

तो वा गैवारे पै एक चादरौ हैगौ। वानै वामैं बांध लियो भइया मंगर और माथे पै उठाके ले गयौ। नदी पै पौंच्यौ वो तो वानै खही–'क भइया आगी नद्दी मंगर।'
'भइया देख तू पानी मं ही पटकियो देख मोय।' मंगर ने की।
'ठीक है पानी मं पटकउंगौ।'
'कितने–कितने औंडे में आगौ?'
'यार मैं कम्मर–कम्मर मं आगौ।' गैवारे ने की।
'कम्मर–कम्मर में आगौ तो ऐसौ कर यार कम्मर मं तो मेरै लग जायगी तू पटकैगौ ऊपर सेइ। तू और चल। भीतर घुस ई पानी मं।' मंगर ने की।
'भइया अब तौ गुदी–गुदी आगौ ई पानी यार।'
'अब पटक द भइया।'
वानै गवारै नं लैकै और वो पटक दियो। पटकतैई वा मंगर वारी जात। पकल्लऔ ऊ।

'ऐ भइया मंगर ई का कर्रोअ यार तू? नीति कै ऊपर बद्दी हो रइअ ई तो। मैं तोय धरकै लायौ और मोय खागौ का तू?' गैवारे ने की।
'देख भइया कुछ कर। मोय भूख लग रइअ। मैं तोयइ खाऊंगौ।' मंगर ने की।

आदमी ने कइ–'रे भैया यो भी अच्छी कमाल की बातअ् यार। मैंने करी तो अच्छी और बुरी हो रइअ्। चल ठीक है यार खा लियो। पर रुक जा यार इ एक गाइ आरीअ पानी पीबे। वासे और पूदलैंदअ् और मोय खाइ लयौ तू।'
'ठीक है।'
'क री गाइ?'
'हां भइया ख।'

पिस्ता,फूल समूह

'क नीति कै ऊपर बद्दी हो जात है का?'
'हां, भइया हो जातअ्।'
'कैसै हो जातअ्?'
'ऐसै होजातअ् क तब मैं किसान के पास हत्ती न बीरा और दो किलो दूद मैं दैरइ। तब तो खर खवारौअ, बांट खवारौअ। आज मेरै पास दूद नहींअ तो चार लट्ठ देअ जा पीया पानी हाड्टोरी। तो ऐसै हो जातअ् भइया नीति कै ऊपर बद्दी, अब मोसे हो रइअ्। दूद देती तो घरै पानी पियातौ धनी।'
मंगर ने खही क भइया अब तो खाऊंगौ।
'यो भी अच्छी बात हुई यार ई। चल ठीक है यार खा लियो। एक बैल और पानी पीबे आराअ् बाय और पूछ लैन्दै तू खाइ लियो अब।' गैवारे ने की।

बैल पानी पीबे आगौ। बानै बैल से कइ–'अरे भइया नीति कै ऊपर बद्दी हो जात है का?'
'हाओ हो जात है भइया।' बैल नं कइ।
'कैसै?'
'मैं किसान के कुरे मं और हर मं चलरौ तब तो मोय घास मिलतौ और अच्छा बढ़िया हिसाब से रखानतौ। अब मैं उठानअ् आगौ और स्यानौ होगौ नंइ तो पूंछ मं अंटा दअे् जा पिया पानी। तो हो जात है भइया?'

'अब तो भइया खाऊंगोइ।' कइ मंगर नं।
आदमी ने कइ, अब तो बचवे बारे नंइअ, दो पूछ लए।

वाई टैम नदी कनारे एक आरौ लड़इया। बैल नअ् कइ–'एक स्वाळयौ और आरौअ, बाय और पूद लैन्दै।'
'ठीक है, पूछ लै यार तू।' बैल नं कइ।
'भइया, पटैल! नीति कै ऊपर बद्दी हो जात है का?' गैवारे ने पूछी।
'कम से कम बात को बताओ तो सइ यार।' कइ मंगर नं।
'अरे भइया का बताऊं यार।' कइ। 'मोय मिलगौ मंगर। यानै कइ मंगर ने क यार मोय पानी मं पटकदअ्। मूंड पै धरकै लायौऊं गठरिया बांध कै मोयइ खाबे की तैयारी करौंअ्।'

'देख भइया नीति कै ऊपर बद्दी तो हो जाय पर ऐसै नीं होय। पैलै दोय निकरकै आओ तुम। पानी से ब्हारै आओ। तब मैं तुमरौ न्याव करऊंगौ।' लड़इया ने कइ।
दोइय निकरे। लड़इया कैरौ आदमी से और मंगर से–'चलौ तू कौनसी जगै से लायौ।'
चले गए तीनंइ। और जाय कै बा मकाम पै। कइ–'कैसै ले गयौ रे तू जाय।'
'यार मैं तो ऐसै बांध कै लैगौ।' गैवारे ने कइ।
'बांध कै बता तो सनी मोय।'लड़इया ने कइ।
अब वो धीरै–धीरै बांधरा डरपरा। लड़इया ने कइ–'घुट्टा लगाकै इयाय।'
लड़इया कैरौ–'क धल्लै इ माथे पै। कैसै लैगौक याय।...'रुक' कइ। बाद मं धरियौ। पैलै लकड़िया ला।'
मंगर कैरौ–'का करैंगे भइया?'
'भूंजैंगे तोय।' मंगर ने कइ।
'अ् भइया भूंजौ मत।'
'नीति कअ् ऊपर बद्दी अब हो रइअ। तू आदमीअ् पागल बनारौ। इतेक अच्छी करी वानै। '...ले आरे गैवारे लकरिया।' मंगर नअ् कइ।
गैवारे ने कइ–'भूंजौ मति याय। खोल दैं और छोड़ चलैं।'

लड़इया ने कइ–'देख लै अभी तो मौकौअ्।'
गैवारे ने कइ–'मोपै नीं भुजैंगौ। याय छोड़ चलैं।'

गैवारो और लड़इया वाय मांही छोड़ कै चले गए, बीच जंगल मं, पानी ते दूर।

सहरिया लोककथा, संकलन–पुनर्लेखन– प्रभात

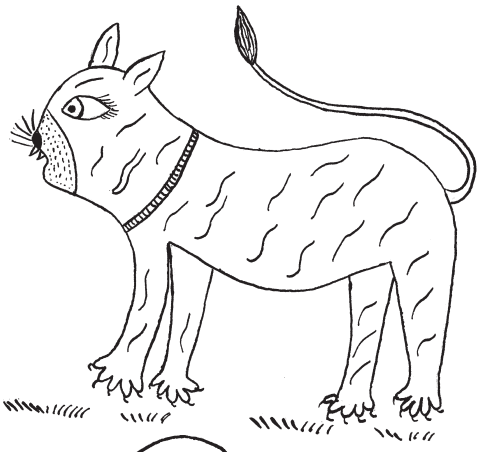

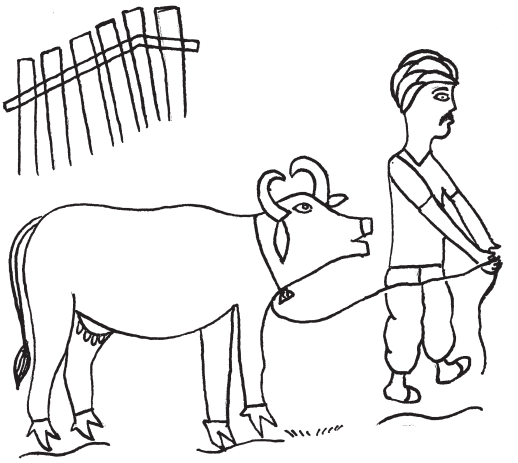

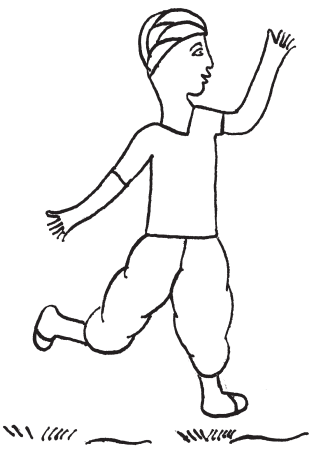

गतिविधि :
इस चित्र को
ध्यान में रखते
हुए कोई एक
कहानी लिखो
और मोरंगे को
भेजो

(चित्रः सुनीता)